

महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन

डॉ. दलीप कुमार

सहायक प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
राजकीय डिग्री कॉलेज, गंगेश्वरी, अमरोहा – 244255

सारांश

महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता लोकतांत्रिक व्यवस्था में समानता, प्रतिनिधित्व और नागरिक सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण आधार है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा राजनीतिक सहभागिता के स्तर का अध्ययन करना और दोनों के बीच सांख्यिकीय संबंध की जाँच करना है। अध्ययन में महिलाओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि, राजनीतिक अधिकारों की जानकारी, राजनीतिक सूचना-स्रोत, राजनीतिक चर्चा, डिजिटल सूचना-साक्षरता, स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय तथा विभिन्न राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता को प्रमुख आयामों के रूप में सम्मिलित किया गया है। उदाहरणात्मक रूप से 300 महिला उत्तरदाताओं के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। परिणामों में राजनीतिक अधिकार जागरूकता का औसत 3.35 और समग्र राजनीतिक सहभागिता का औसत 3.21 पाया गया। मतदान अधिकार, मतदान केंद्र और महिला आरक्षण के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक थी, जबकि राजनीतिक शिकायत-निवारण, प्रतिनिधियों से प्रश्न करने तथा चुनावी नियमों की जानकारी अपेक्षाकृत कम रही। मतदान की नियमितता का औसत अन्य राजनीतिक गतिविधियों की तुलना में अधिक पाया गया, जबकि राजनीतिक बैठकों, प्रतिनिधियों से संपर्क और घोषणापत्र संबंधी जानकारी में सहभागिता अपेक्षाकृत कम रही। शिक्षा, आय, आयु, व्यवसाय और डिजिटल सूचना उपयोग के आधार पर राजनीतिक अधिकार जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। राजनीतिक अधिकार जागरूकता और समग्र राजनीतिक सहभागिता के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। बहु-प्रतिगमन विश्लेषण में राजनीतिक अधिकार जागरूकता, राजनीतिक चर्चा, सूचना-संपर्क, स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय, शिक्षा तथा डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता राजनीतिक सहभागिता के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक दिखाई दिए। अध्ययन से संकेत मिलता है कि महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाने के लिए केवल मतदान संबंधी जानकारी पर्याप्त नहीं है; व्यापक राजनीतिक अधिकारों, सूचना-साक्षरता, स्वतंत्र राजनीतिक अभिव्यक्ति और नागरिक भागीदारी पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

प्रमुख शब्द- महिला राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक अधिकार, राजनीतिक जागरूकता, महिला सशक्तीकरण, मतदाता जागरूकता, राजनीतिक सूचना, लोकतांत्रिक सहभागिता

प्रस्तावना

लोकतंत्र की सफलता केवल चुनावों के आयोजन अथवा निर्वाचित प्रतिनिधियों की उपस्थिति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि नागरिकों की जागरूकता, अधिकारों की समझ और राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता पर भी निर्भर करती है। महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता लोकतांत्रिक व्यवस्था की समावेशिता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। भारत में महिलाओं को संविधान द्वारा समानता, स्वतंत्रता, राजनीतिक अधिकार तथा सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के अवसर प्रदान किए गए हैं। इसके बावजूद राजनीतिक अधिकारों का औपचारिक रूप से प्राप्त होना और उन अधिकारों के प्रति वास्तविक जागरूकता तथा उनका सक्रिय उपयोग करना दो अलग-अलग प्रश्न हैं। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका समय के साथ महत्वपूर्ण रूप से विस्तृत हुई है। महिलाओं को मतदान का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार, राजनीतिक दलों एवं नागरिक संगठनों से जुड़ने का अधिकार तथा स्थानीय शासन में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। स्थानीय स्वशासन के स्तर पर 73वें संविधान संशोधन ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण संस्थागत आधार प्रदान

किया। संविधान के पंचायती राज प्रावधानों के अंतर्गत पंचायतों में महिलाओं के लिए कम-से-कम एक-तिहाई सीटों और अध्यक्ष पदों के आरक्षण का प्रावधान किया गया है। अनेक राज्यों ने पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण का भी प्रावधान किया है। पंचायती राज मंत्रालय की उपलब्ध राज्यवार जानकारी में उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों की पंचायती राज व्यवस्थाओं का विवरण दिया गया है।

- **महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की अवधारणा**-राजनीतिक अधिकारों का अर्थ उन अधिकारों से है जो नागरिकों को राजनीतिक प्रक्रिया में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं। महिलाओं के संदर्भ में इनमें मतदान करना, मतदाता के रूप में पंजीकरण कराना, चुनाव लड़ना, राजनीतिक दलों अथवा संगठनों से जुड़ना, राजनीतिक विचार व्यक्त करना, निर्वाचित प्रतिनिधियों से संवाद करना तथा सार्वजनिक निर्णय-निर्माण में भाग लेना शामिल किया जा सकता है। राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता केवल इस जानकारी तक सीमित नहीं है कि महिला मतदान कर सकती है। इसमें निर्वाचन प्रक्रिया, मतदाता पंजीकरण, मतदान केंद्र, उम्मीदवारों एवं मुद्दों की जानकारी, स्थानीय निकायों की भूमिका, प्रतिनिधियों के अधिकार एवं उत्तरदायित्व, राजनीतिक शिकायत और सहभागिता के माध्यमों की समझ भी शामिल होनी चाहिए।
- **महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता**-राजनीतिक जागरूकता व्यक्ति को राजनीतिक व्यवस्था को समझने और उसमें अपनी भूमिका पहचानने में सहायता करती है। जागरूक महिला अपने मताधिकार का उपयोग अधिक सूचित तरीके से कर सकती है, उम्मीदवारों एवं नीतिगत मुद्दों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकती है तथा स्थानीय और व्यापक राजनीतिक निर्णयों पर अपनी राय व्यक्त कर सकती है। भारत निर्वाचन आयोग का SVEEP कार्यक्रम मतदाता शिक्षा, मतदाता जागरूकता और लोकतांत्रिक चुनावी सहभागिता को बढ़ाने के लिए संचालित किया जाता है। आयोग के अनुसार कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों को चुनावी प्रक्रिया से संबंधित आधारभूत जानकारी उपलब्ध कराना तथा उनकी भागीदारी को बढ़ावा देना है।
- **महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता**-राजनीतिक सहभागिता को केवल मतदान के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। मतदान राजनीतिक सहभागिता का महत्वपूर्ण प्रारंभिक रूप है, लेकिन इसके अतिरिक्त राजनीतिक चर्चा, चुनावी मुद्दों पर विचार-विमर्श, राजनीतिक बैठकों में भागीदारी, प्रतिनिधियों से संपर्क, स्थानीय समस्याओं को उठाना, राजनीतिक अभियानों में भाग लेना, चुनाव लड़ना और सार्वजनिक निर्णय-निर्माण में योगदान देना भी राजनीतिक सहभागिता के महत्वपूर्ण रूप हैं। महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में परिवार, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक वातावरण, राजनीतिक जानकारी, डिजिटल माध्यमों तक पहुँच, राजनीतिक दलों से संपर्क, स्थानीय नेतृत्व तथा सामाजिक मानदंडों की भूमिका हो सकती है। इसलिए महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता और वास्तविक राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का अध्ययन आवश्यक है।
- **संस्थागत प्रतिनिधित्व और वास्तविक सहभागिता**-स्थानीय शासन में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए आरक्षण ने महत्वपूर्ण संस्थागत अवसर उपलब्ध कराए हैं। पंचायती राज मंत्रालय महिलाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों और महिला प्रधानों से संबंधित विषयों पर अलग से अध्ययन एवं संस्थागत पहल भी संचालित करता है। हालाँकि किसी संस्था में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ना और महिलाओं की राजनीतिक निर्णय-निर्माण में वास्तविक प्रभावशीलता दो अलग-अलग आयाम हो सकते हैं। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि महिलाएँ अपने राजनीतिक अधिकारों को कितनी अच्छी तरह समझती हैं और उस जानकारी का उपयोग राजनीतिक गतिविधियों में किस सीमा तक करती हैं।

शोध प्रश्न-"महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का स्तर क्या है तथा राजनीतिक अधिकारों की यह जागरूकता उनकी राजनीतिक सहभागिता से किस प्रकार संबंधित है?"

परिकल्पनाएँ

H₀₁-महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता और उनकी राजनीतिक सहभागिता के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

H₀₂-विभिन्न शैक्षिक स्तरों वाली महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के औसत स्तर में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H₀₃-राजनीतिक सूचना-संपर्क, राजनीतिक चर्चा और राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक नहीं हैं।

अध्ययन का महत्व

- महिलाएँ लोकतांत्रिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण नागरिक हैं। उनके राजनीतिक अधिकारों की जानकारी और सक्रिय सहभागिता लोकतंत्र की समावेशिता को समझने में महत्वपूर्ण है।
- राजनीतिक अधिकारों की जानकारी महिलाओं को अपने मताधिकार और अन्य लोकतांत्रिक अधिकारों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सहायता कर सकती है।
- अध्ययन महिलाओं के मतदाता पंजीकरण, मतदान, उम्मीदवारों के बारे में जानकारी तथा चुनावी मुद्दों की समझ जैसे आयामों को समझने में उपयोगी होगा।
- पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के संवैधानिक प्रतिनिधित्व ने स्थानीय राजनीतिक भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए हैं। महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन स्थानीय शासन में उनकी भूमिका को समझने में उपयोगी हो सकता है।
- अध्ययन के परिणाम महिला-केंद्रित मतदाता जागरूकता, राजनीतिक शिक्षा और नागरिक सहभागिता कार्यक्रमों के निर्माण में उपयोगी हो सकते हैं।
- निर्वाचन आयोग का SVEEP कार्यक्रम मतदाता शिक्षा और सहभागिता को बढ़ाने पर केंद्रित है। महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों की विशिष्ट जागरूकता का अध्ययन ऐसे कार्यक्रमों के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है।
- महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहती, बल्कि स्थानीय विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सामाजिक कल्याण जैसे मुद्दों पर सार्वजनिक विमर्श को भी प्रभावित कर सकती है।

अध्ययन की आवश्यकता

महिलाओं को संवैधानिक रूप से राजनीतिक अधिकार प्राप्त होने के बावजूद इन अधिकारों की जानकारी और वास्तविक उपयोग का स्तर सभी सामाजिक समूहों में समान होना आवश्यक नहीं है। शिक्षा, आय, निवास, आर्थिक स्वतंत्रता, पारिवारिक वातावरण, राजनीतिक सूचना तक पहुँच तथा सामाजिक परिस्थितियाँ महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता और सहभागिता से जुड़ी हो सकती हैं। इसलिए केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि महिलाएँ मतदान करती हैं या नहीं। यह जानना भी आवश्यक है कि वे अपने मताधिकार, चुनावी प्रक्रिया, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, स्थानीय शासन, उम्मीदवारों, राजनीतिक मुद्दों और नागरिक सहभागिता के अन्य माध्यमों के बारे में कितना जानती हैं। विशेष रूप से वर्तमान डिजिटल युग में महिलाओं के राजनीतिक सूचना-स्रोतों में सामाजिक माध्यम, ऑनलाइन समाचार, मोबाइल फोन और डिजिटल सरकारी प्लेटफॉर्म की भूमिका बढ़ी है। इसलिए राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन पारंपरिक स्रोतों के साथ डिजिटल सूचना-स्रोतों को भी शामिल करके किया जाना आवश्यक है। यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि राजनीतिक अधिकारों की जानकारी और राजनीतिक सहभागिता के बीच संभावित अंतर को समझना महिला राजनीतिक सशक्तीकरण की वास्तविक स्थिति को अधिक व्यापक रूप से समझने में सहायता करेगा।

शोध-अंतराल

उपलब्ध साहित्य एवं संस्थागत संदर्भों के आधार पर निम्न शोध-अंतरालों की पहचान की जा सकती है—

- अनेक चर्चाएँ महिलाओं के मतदान या प्रतिनिधित्व पर केंद्रित रहती हैं, जबकि राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता और वास्तविक राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का संयुक्त अध्ययन अधिक उपयोगी हो सकता है।
- राजनीतिक सहभागिता को केवल मतदान तक सीमित करने के बजाय राजनीतिक चर्चा, प्रतिनिधियों से संपर्क, राजनीतिक बैठकों में भागीदारी, चुनावी मुद्दों पर विचार-विमर्श और स्थानीय निर्णय-निर्माण को भी शामिल करने की आवश्यकता है।
- विभिन्न शैक्षिक स्तरों वाली महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता में संभावित अंतर का अनुभवजन्य परीक्षण आवश्यक है।
- परिवार, मित्र, समाचार माध्यम, राजनीतिक संगठन और डिजिटल सामाजिक माध्यम महिलाओं की राजनीतिक जानकारी के अलग-अलग स्रोत हो सकते हैं। इनके तुलनात्मक महत्व का अध्ययन आवश्यक है।
- डिजिटल माध्यमों के बढ़ते उपयोग के संदर्भ में महिलाओं की ऑनलाइन राजनीतिक सूचना तक पहुँच और उसकी समझ को पारंपरिक राजनीतिक जागरूकता के साथ जोड़कर अध्ययन करने की आवश्यकता है।
- महिलाओं को अपने राजनीतिक अधिकारों की जानकारी होना और उन अधिकारों का व्यवहार में उपयोग करना अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं। इन दोनों के बीच संबंध का सांख्यिकीय परीक्षण महत्वपूर्ण शोध-अंतराल प्रस्तुत करता है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. अध्ययन का केंद्र **महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं राजनीतिक सहभागिता** रहेगा।
2. अध्ययन में महिलाओं की राजनीतिक अधिकार संबंधी जानकारी में मतदान का अधिकार, मतदाता पंजीकरण, चुनावी प्रक्रिया, चुनाव लड़ने का अधिकार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व तथा स्थानीय शासन से संबंधित जानकारी को शामिल किया जाएगा।
3. राजनीतिक सहभागिता में मतदान, राजनीतिक चर्चा, चुनावी मुद्दों पर विचार-विमर्श, प्रतिनिधियों से संपर्क, राजनीतिक कार्यक्रमों में भागीदारी तथा स्थानीय निर्णय-निर्माण में सहभागिता जैसे आयाम शामिल किए जा सकते हैं।
4. अध्ययन चयनित क्षेत्र एवं चयनित महिला उत्तरदाताओं तक सीमित रहेगा।
5. अध्ययन में विभिन्न आयु, शैक्षिक स्तर, व्यवसाय, आय तथा सामाजिक पृष्ठभूमि की महिलाओं को शामिल किया जा सकता है।
6. अध्ययन मुख्यतः **मात्रात्मक सर्वेक्षण पद्धति** पर आधारित रखा जाएगा।
7. अध्ययन किसी विशेष राजनीतिक दल, उम्मीदवार या राजनीतिक विचारधारा के समर्थन अथवा विरोध का मूल्यांकन नहीं करेगा।
8. अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की व्यक्तिगत राजनीतिक पसंद का अनुमान लगाना नहीं, बल्कि उनके **राजनीतिक अधिकारों संबंधी ज्ञान और सहभागिता के स्तर** का अध्ययन करना होगा।
9. अध्ययन के निष्कर्ष चयनित प्रतिदर्श की विशेषताओं से प्रभावित हो सकते हैं; इसलिए उन्हें सभी महिलाओं पर सार्वभौमिक रूप से लागू करते समय सावधानी आवश्यक होगी।
10. यदि डिजिटल राजनीतिक सूचना को अध्ययन में शामिल किया जाता है, तो उसका विश्लेषण मुख्यतः सूचना-प्राप्ति, सूचना-स्रोत और राजनीतिक जागरूकता के संदर्भ में किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता एवं सहभागिता लोकतांत्रिक समावेशन, राजनीतिक समानता और नागरिक सशक्तीकरण के अध्ययन का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत में महिलाओं को समान नागरिक एवं राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं, लेकिन इन अधिकारों की औपचारिक उपलब्धता और उनका व्यवहारिक उपयोग सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक तथा पारिवारिक परिस्थितियों से प्रभावित हो सकता है। निर्वाचन आयोग का व्यवस्थित मतदाता शिक्षा एवं निर्वाचन सहभागिता कार्यक्रम मतदाता जागरूकता, निर्वाचन साक्षरता तथा चुनावी प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ाने को अपना प्रमुख उद्देश्य मानता है।

चिब्वर (2002) ने भारत में महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता का अध्ययन करते हुए पाया कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल जनसांख्यिकीय विशेषताओं से निर्धारित नहीं होती, बल्कि परिवार के बाहर उनकी सामाजिक पहचान और सार्वजनिक जीवन में उपस्थिति भी महत्वपूर्ण होती है। उनके अध्ययन में स्थानीय निकायों में महिलाओं के राजनीतिक प्रवेश के संदर्भ में यह पाया गया कि जिन महिलाओं की स्वतंत्र सामाजिक पहचान अधिक थी, उनके राजनीतिक रूप से सक्रिय होने की संभावना भी अधिक थी। चट्टोपाध्याय और डुफ्लो (2004) ने भारत में महिला आरक्षण और स्थानीय नीति-निर्माण के संबंध का अध्ययन किया। उनके शोध ने यह प्रदर्शित किया कि पंचायत नेतृत्व में महिलाओं का प्रतिनिधित्व स्थानीय सार्वजनिक वस्तुओं और नीति-निर्णयों की प्राथमिकताओं से जुड़ा हो सकता है। यह अध्ययन राजनीतिक प्रतिनिधित्व को केवल संख्या के रूप में देखने के बजाय निर्णय-निर्माण पर उसके संभावित प्रभाव को समझने का आधार प्रदान करता है। अमेर (2009) ने नागालैंड की महिला मतदाताओं में राजनीतिक जागरूकता और सहभागी व्यवहार का विश्लेषण किया। अध्ययन में अधिकांश महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता मध्यम स्तर की पाई गई। राजनीतिक रुचि, मीडिया संपर्क और राजनीतिक चर्चा राजनीतिक जागरूकता से संबंधित पाए गए। हालांकि राजनीतिक जागरूकता का चुनावी गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता पर प्रभाव सीमित पाया गया। यह निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संकेत देता है कि केवल राजनीतिक जानकारी पर्याप्त नहीं हो सकती; जागरूकता को वास्तविक सहभागिता में बदलने के लिए अन्य सामाजिक और संस्थागत कारक भी आवश्यक हो सकते हैं। राय (2017) ने भारत में महिलाओं की चुनावी राजनीति में सहभागिता का ऐतिहासिक एवं अनुभवजन्य विश्लेषण किया। अध्ययन में महिलाओं के मतदाता के रूप में बढ़ते राजनीतिक महत्व और चुनावी अभियानों में उनकी बढ़ती भागीदारी को रेखांकित किया गया, लेकिन विधायी संस्थाओं तथा राजनीतिक दलों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की सीमाओं पर भी ध्यान दिया गया। इससे मतदान सहभागिता और व्यापक राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बीच अंतर की ओर संकेत मिलता है। पंचायती राज संस्थाओं के संदर्भ में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व भी महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र रहा है। उपलब्ध अध्ययनों में यह पाया गया है कि 73वें संविधान संशोधन के बाद स्थानीय शासन में महिलाओं की संस्थागत उपस्थिति बढ़ी, लेकिन प्रतिनिधित्व को वास्तविक राजनीतिक प्रभाव और निर्णय-निर्माण में बदलने के लिए स्थानीय सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। पंचायती राज मंत्रालय भी महिलाओं के प्रतिनिधित्व और आरक्षण की स्थिति से संबंधित आधिकारिक जानकारी प्रकाशित करता है। महिलाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति पर हालिया शोध ने एक महत्वपूर्ण विरोधाभास की ओर ध्यान आकर्षित किया है। हैदर और नूरुद्दीन (2024) ने भारतीय महिलाओं के संदर्भ में पाया कि मतदान की उच्च सहभागिता के बावजूद राजनीतिक रुचि और राजनीतिक मुद्दों पर राय व्यक्त करने की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम रिपोर्ट की जा सकती है। उनके अध्ययन में पारिवारिक वातावरण और सर्वेक्षण के दौरान निजी रूप से उत्तर देने की परिस्थितियों का महिलाओं की राजनीतिक अभिव्यक्ति पर प्रभाव पाया गया। स्थानीय शासन के संदर्भ में महिलाओं की भागीदारी पर उपलब्ध अध्ययनों में यह भी सामने आया है कि पंचायतें महिलाओं को स्थानीय मुद्दों को राजनीतिक मंच पर उठाने का अवसर प्रदान कर सकती हैं, लेकिन निजी स्तर पर व्यक्त की जाने वाली समस्याएँ हमेशा पंचायत की औपचारिक चर्चाओं तक नहीं पहुँचतीं। हाल के शोध में स्थानीय स्वशासन में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को लोकतांत्रिक समावेशन और जमीनी राजनीतिक सहभागिता से जोड़कर देखा गया है। इसके साथ ही 2026 में ग्राम सभा में कम भागीदारी पर पंचायती राज मंत्रालय की राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जो स्थानीय लोकतंत्र में नागरिक सहभागिता के प्रश्न की समकालीन प्रासंगिकता को दर्शाती है। समीक्षित साहित्य से स्पष्ट है कि महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता पर मतदान, प्रतिनिधित्व, पंचायत नेतृत्व, राजनीतिक रुचि और सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं। फिर भी **महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की बहुआयामी जागरूकता और व्यापक राजनीतिक सहभागिता के बीच सांख्यिकीय संबंध** का संयुक्त अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। विशेष रूप से शिक्षा, आय, राजनीतिक सूचना-संपर्क, डिजिटल सूचना-साक्षरता, राजनीतिक चर्चा तथा स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय को एक साथ रखकर अध्ययन करने की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन इसी शोध-अंतराल को संबोधित करने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन **वर्णनात्मक एवं सहसंबंधात्मक सर्वेक्षण पद्धति** पर आधारित है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के स्तर का निर्धारण करना तथा इस जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का परीक्षण करना है। उदाहरणात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए कुल **300 महिला उत्तरदाताओं** को प्रतिदर्श के रूप में माना गया है। उत्तरदाताओं में विभिन्न आयु, शैक्षिक, व्यवसायिक और आर्थिक पृष्ठभूमि

वाली महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। आँकड़ा-संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का प्रयोग प्रस्तावित है। प्रश्नावली को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है—सामाजिक-जनसांख्यिकीय जानकारी, राजनीतिक अधिकार जागरूकता तथा राजनीतिक सहभागिता। राजनीतिक अधिकार जागरूकता में मतदान का अधिकार, मतदाता पंजीकरण, मतदान केंद्र, चुनाव लड़ने का अधिकार, राजनीतिक विचार व्यक्त करना, स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व, महिला आरक्षण, ग्राम सभा में भागीदारी, प्रतिनिधियों से प्रश्न करना तथा शिकायत-निवारण जैसे आयाम शामिल किए गए हैं। राजनीतिक सहभागिता में मतदान, उम्मीदवारों एवं चुनावी मुद्दों की जानकारी, राजनीतिक चर्चा, स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय, प्रतिनिधियों से संपर्क, राजनीतिक बैठकों में भागीदारी, स्थानीय मुद्दे उठाना और ऑनलाइन राजनीतिक गतिविधि को शामिल किया गया है। अधिकांश दृष्टिकोणात्मक मद्दों के लिए पाँच-बिंदु मापनी का प्रयोग किया जा सकता है। प्रश्नावली की विषय-वस्तु वैधता विशेषज्ञों के सुझावों से तथा आंतरिक संगति क्रोनबाख अल्फा द्वारा निर्धारित की जा सकती है। आँकड़ों के विश्लेषण में आवृत्ति, प्रतिशत, औसत, मानक विचलन, एक-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण, पियर्सन सहसंबंध तथा बहु-प्रतिगमन का प्रयोग किया गया है। शिक्षा, आय, आयु, व्यवसाय और डिजिटल सूचना उपयोग के आधार पर जागरूकता में अंतर की जाँच की गई है। राजनीतिक अधिकार जागरूकता और सहभागिता के बीच संबंध तथा सहभागिता के पूर्वानुमानकों की पहचान के लिए सहसंबंध एवं प्रतिगमन विश्लेषण का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत सांख्यिकीय परिणाम उदाहरणात्मक हैं और वास्तविक क्षेत्रीय सर्वेक्षण के बाद सत्यापित किए जाने चाहिए।

सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1-महिला उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय, शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का विस्तृत वितरण

चर	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
आयु	18-25 वर्ष	48	16.0
	26-35 वर्ष	66	22.0
	36-45 वर्ष	78	26.0
	46-55 वर्ष	60	20.0
	56 वर्ष एवं अधिक	48	16.0
वैवाहिक स्थिति	अविवाहित	72	24.0
	विवाहित	192	64.0
	विधवा	30	10.0
	अन्य	6	2.0
शिक्षा	अशिक्षित	36	12.0
	प्राथमिक	48	16.0
	माध्यमिक	66	22.0
	उच्च माध्यमिक	60	20.0
	स्नातक	60	20.0
व्यवसाय	स्नातकोत्तर एवं अधिक	30	10.0
	गृहिणी	108	36.0
	कृषि	60	20.0
	कृषि मजदूरी	42	14.0
	निजी/स्वरोजगार	48	16.0
	सरकारी सेवा	18	6.0
मासिक पारिवारिक आय	अन्य	24	8.0
	₹10,000 से कम	60	20.0
	₹10,001-20,000	96	32.0
	₹20,001-30,000	72	24.0
	₹30,001-50,000	48	16.0

	₹50,000 से अधिक	24	8.0
निवास	ग्रामीण	168	56.0
	अर्ध-शहरी	78	26.0
	शहरी	54	18.0
व्यक्तिगत मोबाइल	हाँ	264	88.0
	नहीं	36	12.0
इंटरनेट उपयोग	नियमित	156	52.0
	कभी-कभी	90	30.0
	नहीं	54	18.0

तालिका 1 में अध्ययन में सम्मिलित 300 महिला उत्तरदाताओं की सामाजिक-जनसांख्यिकीय, शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई है। आयु के आधार पर 36-45 वर्ष की महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक 26 प्रतिशत है, जबकि 26-35 वर्ष की महिलाएँ 22 प्रतिशत हैं। 18-25 वर्ष तथा 56 वर्ष एवं अधिक आयु वर्ग दोनों में 16-16 प्रतिशत उत्तरदाता हैं। इससे अध्ययन में विभिन्न आयु समूहों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिखाई देता है। वैवाहिक स्थिति में विवाहित महिलाओं की संख्या सर्वाधिक 64 प्रतिशत है। अविवाहित महिलाओं का प्रतिशत 24 है, जबकि विधवा महिलाओं का 10 प्रतिशत है। यह वितरण महिलाओं के पारिवारिक संदर्भ और राजनीतिक सहभागिता के संभावित संबंध का अध्ययन करने के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है। शैक्षिक स्थिति में माध्यमिक स्तर की महिलाओं का प्रतिशत 22 है। उच्च माध्यमिक और स्नातक दोनों समूहों में 20-20 प्रतिशत महिलाएँ हैं। 12 प्रतिशत महिलाएँ अशिक्षित हैं, जबकि 10 प्रतिशत स्नातकोत्तर या उससे अधिक शिक्षित हैं। इस प्रकार शिक्षा के विभिन्न स्तरों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व है, जिससे राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता में शैक्षिक अंतर की जाँच की जा सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से 36 प्रतिशत महिलाएँ गृहिणी हैं, जबकि 20 प्रतिशत कृषि और 14 प्रतिशत कृषि मजदूरी से जुड़ी हैं। इस प्रकार अध्ययन में बड़ी संख्या में महिलाएँ ग्रामीण एवं कृषि-आधारित सामाजिक-आर्थिक संरचना से संबंधित हैं। महत्वपूर्ण रूप से 88 प्रतिशत महिलाओं के पास व्यक्तिगत मोबाइल फोन है और 52 प्रतिशत नियमित इंटरनेट उपयोग करती हैं। यह डिजिटल राजनीतिक सूचना तक महिलाओं की संभावित पहुँच का महत्वपूर्ण संकेतक है। निर्वाचन आयोग का मतदाता शिक्षा कार्यक्रम भी मतदाता साक्षरता और चुनावी प्रक्रिया की जानकारी को लोकतांत्रिक सहभागिता से जोड़ता है।

तालिका 2-महिलाओं में राजनीतिक एवं संवैधानिक अधिकारों के विभिन्न आयामों के प्रति जागरूकता का स्तर

राजनीतिक अधिकार/जागरूकता का आयाम	निम्न f (%)	मध्यम f (%)	उच्च f (%)	औसत	मानक विचलन
मतदान का अधिकार	30 (10.0)	84 (28.0)	186 (62.0)	3.82	0.91
मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने की जानकारी	42 (14.0)	102 (34.0)	156 (52.0)	3.61	0.96
मतदान केंद्र की जानकारी	36 (12.0)	96 (32.0)	168 (56.0)	3.70	0.93
चुनाव लड़ने का अधिकार	54 (18.0)	108 (36.0)	138 (46.0)	3.42	1.01
राजनीतिक दल से जुड़ने का अधिकार	72 (24.0)	126 (42.0)	102 (34.0)	3.12	0.98
राजनीतिक विचार व्यक्त करने का अधिकार	60 (20.0)	114 (38.0)	126 (42.0)	3.35	0.97
समान राजनीतिक अधिकार	48 (16.0)	108 (36.0)	144 (48.0)	3.51	0.94
स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व	54 (18.0)	102 (34.0)	144 (48.0)	3.49	0.99
पंचायतों में महिला आरक्षण	42 (14.0)	96 (32.0)	162 (54.0)	3.63	0.95
ग्राम सभा में भागीदारी का अधिकार	66 (22.0)	120 (40.0)	114 (38.0)	3.19	1.00
निर्वाचित प्रतिनिधि से प्रश्न करने का अधिकार	90 (30.0)	120 (40.0)	90 (30.0)	2.94	0.96
राजनीतिक शिकायत/शिकायत-निवारण की जानकारी	96 (32.0)	126 (42.0)	78 (26.0)	2.82	0.94
चुनावी नियम एवं आचार-संबंधी जानकारी	84 (28.0)	132 (44.0)	84 (28.0)	2.96	0.92

समग्र राजनीतिक अधिकार जागरूकता	54 (18.0)	120 (40.0)	126 (42.0)	3.35	0.71
--------------------------------	--------------	---------------	---------------	------	------

तालिका 2 महिलाओं में राजनीतिक एवं संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के विभिन्न आयामों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समग्र राजनीतिक अधिकार जागरूकता का औसत 3.35 और मानक विचलन 0.71 है। 42 प्रतिशत महिलाओं का जागरूकता स्तर उच्च, 40 प्रतिशत का मध्यम तथा 18 प्रतिशत का निम्न पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि अधिकांश महिला उत्तरदाता अपने राजनीतिक अधिकारों से किसी न किसी स्तर पर परिचित हैं, लेकिन सभी अधिकारों के संबंध में जागरूकता समान नहीं है। मतदान के अधिकार का औसत 3.82 रहा, जो तालिका में सर्वाधिक है। 62 प्रतिशत महिलाओं में मतदान अधिकार की उच्च जागरूकता पाई गई। मतदान केंद्र की जानकारी का औसत 3.70 तथा मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने की जानकारी का औसत 3.61 रहा। इससे पता चलता है कि चुनाव में प्रत्यक्ष भागीदारी से जुड़े अधिकार अपेक्षाकृत अधिक परिचित हैं। पंचायतों में महिला आरक्षण का औसत 3.63 और स्थानीय निकायों में महिला प्रतिनिधित्व का औसत 3.49 है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए आरक्षण का संवैधानिक आधार है और कई राज्यों ने पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत आरक्षण भी लागू किया है। इसके विपरीत राजनीतिक शिकायत-निवारण का औसत केवल 2.82 और निर्वाचित प्रतिनिधियों से प्रश्न करने के अधिकार का औसत 2.94 रहा। चुनावी नियमों का औसत 2.96 भी अपेक्षाकृत कम है। इसका संकेत यह हो सकता है कि महिलाएँ अपने बुनियादी मतदान अधिकारों को अधिक जानती हैं, जबकि राजनीतिक जवाबदेही और सक्रिय नागरिक अधिकारों की जानकारी अपेक्षाकृत कम है। ग्राम सभा में भागीदारी के अधिकार का औसत 3.19 रहा। इसलिए यह आवश्यक है कि राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता को केवल मतदान तक सीमित न रखकर प्रतिनिधित्व, प्रश्न करने, शिकायत करने और निर्णय-निर्माण में भाग लेने तक विस्तारित किया जाए।

तालिका 3-महिलाओं के राजनीतिक सूचना-स्रोत, राजनीतिक चर्चा, सूचना-सत्यापन तथा डिजिटल राजनीतिक संपर्क का तुलनात्मक विश्लेषण

सूचना/संपर्क का आयाम	निम्न f (%)	मध्यम f (%)	उच्च f (%)	औसत	मानक विचलन
परिवार से राजनीतिक जानकारी	54 (18.0)	120 (40.0)	126 (42.0)	3.31	0.95
पति/परिवार के अन्य सदस्य	66 (22.0)	114 (38.0)	120 (40.0)	3.24	0.99
मित्र/पड़ोसी	72 (24.0)	132 (44.0)	96 (32.0)	3.12	0.96
समाचार-पत्र	102 (34.0)	126 (42.0)	72 (24.0)	2.88	0.93
दूरदर्शन/रेडियो	66 (22.0)	126 (42.0)	108 (36.0)	3.18	0.97
मोबाइल/इंटरनेट	54 (18.0)	108 (36.0)	138 (46.0)	3.42	1.00
सामाजिक माध्यम	60 (20.0)	120 (40.0)	120 (40.0)	3.32	1.01
ऑनलाइन समाचार	78 (26.0)	126 (42.0)	96 (32.0)	3.08	0.97
राजनीतिक वीडियो	72 (24.0)	126 (42.0)	102 (34.0)	3.14	1.02
महिला राजनीतिक समूह/संगठन	126 (42.0)	114 (38.0)	60 (20.0)	2.72	0.94
स्थानीय राजनीतिक बैठक	108 (36.0)	126 (42.0)	66 (22.0)	2.81	0.91
राजनीतिक मुद्दों पर परिवार में चर्चा	60 (20.0)	114 (38.0)	126 (42.0)	3.28	0.98
विभिन्न स्रोतों से सूचना की तुलना	102 (34.0)	126 (42.0)	72 (24.0)	2.91	0.95
सूचना की सत्यता जाँचना	108 (36.0)	120 (40.0)	72 (24.0)	2.84	0.94
समग्र राजनीतिक सूचना-संपर्क	69 (23.0)	129 (43.0)	102 (34.0)	3.09	0.69

तालिका 3 महिलाओं के राजनीतिक सूचना-स्रोतों और राजनीतिक संचार के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करती है। समग्र राजनीतिक सूचना-संपर्क का औसत 3.09 है। 34 प्रतिशत महिलाओं का सूचना-संपर्क उच्च, 43 प्रतिशत का मध्यम तथा 23 प्रतिशत का निम्न है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं तक राजनीतिक सूचना पहुँच रही है, लेकिन उसका नियमित और बहु-स्रोत उपयोग सभी महिलाओं में समान नहीं है। मोबाइल/इंटरनेट का औसत 3.42 है, जो सभी स्रोतों में सर्वाधिक है। सामाजिक माध्यम का औसत 3.32 और परिवार से राजनीतिक जानकारी का औसत 3.31 है। इससे पता चलता है कि

महिलाओं के राजनीतिक सूचना-संसार में डिजिटल माध्यमों के साथ पारिवारिक सामाजिककरण की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार में राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा का औसत 3.28 रहा। इसके विपरीत महिला राजनीतिक समूहों या संगठनों से सूचना का औसत 2.72 तथा स्थानीय राजनीतिक बैठकों का 2.81 है। इसका संकेत यह है कि राजनीतिक जानकारी प्राप्त करने और राजनीतिक संगठनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के बीच अंतर हो सकता है। समाचार-पत्र का औसत 2.88 रहा, जबकि ऑनलाइन समाचार का औसत 3.08 है। इससे संकेत मिलता है कि पारंपरिक प्रिंट माध्यम की तुलना में डिजिटल सूचना का उपयोग अधिक हो सकता है। हालांकि, विभिन्न स्रोतों से सूचना की तुलना का औसत 2.91 और सूचना की सत्यता जाँचने का औसत 2.84 है। इसलिए डिजिटल पहुँच के साथ सूचना-साक्षरता और सत्यापन क्षमता भी महत्वपूर्ण है। महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता बढ़ाने के लिए केवल सूचना उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है। उन्हें सूचना के स्रोतों की विश्वसनीयता पहचानने और विभिन्न स्रोतों की तुलना करने में सक्षम बनाना भी आवश्यक है। निर्वाचन आयोग का SVEEP कार्यक्रम इसी व्यापक मतदाता शिक्षा और मतदाता साक्षरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संचालित है।

तालिका 4-महिलाओं की मतदान संबंधी तैयारी, राजनीतिक रुचि, स्वतंत्र निर्णय-क्षमता एवं व्यापक राजनीतिक सहभागिता का विश्लेषण

राजनीतिक सहभागिता का आयाम	निम्न f (%)	मध्यम f (%)	उच्च f (%)	औसत	मानक विचलन
मतदान करने की नियमितता	24 (8.0)	66 (22.0)	210 (70.0)	4.02	0.88
मतदान को नागरिक कर्तव्य मानना	30 (10.0)	78 (26.0)	192 (64.0)	3.88	0.94
उम्मीदवारों के बारे में जानकारी लेना	60 (20.0)	126 (42.0)	114 (38.0)	3.28	0.97
चुनावी मुद्दों पर जानकारी लेना	48 (16.0)	120 (40.0)	132 (44.0)	3.44	0.96
उम्मीदवारों की तुलना करना	72 (24.0)	126 (42.0)	102 (34.0)	3.19	0.98
घोषणापत्र/नीतियों के बारे में जानना	102 (34.0)	126 (42.0)	72 (24.0)	2.88	0.94
राजनीतिक चर्चा में भाग लेना	66 (22.0)	132 (44.0)	102 (34.0)	3.14	0.96
परिवार से स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय	78 (26.0)	120 (40.0)	102 (34.0)	3.13	1.01
अपनी राजनीतिक राय व्यक्त करना	72 (24.0)	126 (42.0)	102 (34.0)	3.18	0.98
प्रतिनिधि से संपर्क करना	96 (32.0)	126 (42.0)	78 (26.0)	2.94	0.95
राजनीतिक बैठकों में भाग लेना	114 (38.0)	120 (40.0)	66 (22.0)	2.79	0.92
स्थानीय मुद्दे उठाना	90 (30.0)	126 (42.0)	84 (28.0)	2.98	0.97
सामाजिक/नागरिक अभियान में भागीदारी	72 (24.0)	132 (44.0)	96 (32.0)	3.07	0.96
ऑनलाइन राजनीतिक गतिविधि	84 (28.0)	126 (42.0)	90 (30.0)	3.01	1.02
समग्र राजनीतिक सहभागिता	60 (20.0)	132 (44.0)	108 (36.0)	3.21	0.68

तालिका 4 महिलाओं की मतदान तैयारी और व्यापक राजनीतिक सहभागिता के बीच अंतर को स्पष्ट करती है। समग्र राजनीतिक सहभागिता का औसत 3.21 है। 36 प्रतिशत महिलाओं की सहभागिता उच्च, 44 प्रतिशत की मध्यम और 20 प्रतिशत की निम्न है। यह वितरण बताता है कि महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता मौजूद है, लेकिन इसके विभिन्न रूपों में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। मतदान की नियमितता का औसत 4.02 रहा, जो तालिका का सर्वाधिक औसत है। 70 प्रतिशत महिलाओं ने उच्च स्तर की मतदान-संबंधी सहभागिता प्रदर्शित की। मतदान को नागरिक कर्तव्य मानने का औसत 3.88 रहा। ये परिणाम बताते हैं कि औपचारिक चुनावी सहभागिता महिलाओं के बीच अपेक्षाकृत मजबूत है। इसके विपरीत घोषणापत्र या नीतियों के बारे में जानकारी लेने का औसत 2.88, राजनीतिक बैठकों में भाग लेने का 2.79 और प्रतिनिधियों से संपर्क का 2.94 रहा। इससे यह संकेत मिलता है कि मतदान करने की इच्छा या व्यवहार अधिक होने के बावजूद राजनीतिक प्रक्रिया के गहन और निरंतर आयामों में सहभागिता अपेक्षाकृत कम हो सकती है। परिवार से स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय का औसत 3.13 और अपनी राजनीतिक राय व्यक्त करने का 3.18 रहा। यह आयाम महिला राजनीतिक स्वायत्तता को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। उम्मीदवारों की तुलना का औसत 3.19 और चुनावी मुद्दों की जानकारी का 3.44 रहा, जिससे पता चलता है कि मुद्दा-आधारित राजनीतिक जानकारी मतदान व्यवहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकती है। ऑनलाइन राजनीतिक गतिविधि का औसत 3.01 है, जबकि सामाजिक एवं नागरिक अभियानों में सहभागिता 3.07 है। इस प्रकार

राजनीतिक सहभागिता केवल मतदान तक सीमित नहीं है, लेकिन सक्रिय संगठनात्मक और प्रतिनिधि-आधारित गतिविधियों में अभी भी अपेक्षाकृत कम भागीदारी दिखाई देती है।

तालिका 5-आयु, शिक्षा, आय, व्यवसाय एवं डिजिटल सूचना उपयोग के आधार पर महिलाओं की राजनीतिक अधिकार जागरूकता में अंतर का सांख्यिकीय परीक्षण

स्वतंत्र चर	श्रेणी	N	औसत जागरूकता	मानक विचलन	परीक्षण मान	p-मूल्य
आयु	18-25	48	3.08	0.69	3.84	.005**
	26-35	66	3.22	0.70		
	36-45	78	3.36	0.68		
	46-55	60	3.42	0.71		
	56+	48	3.55	0.67		
शिक्षा	अशिक्षित	36	2.71	0.61	11.27	<.001**
	प्राथमिक	48	2.89	0.65		
	माध्यमिक	66	3.12	0.67		
	उच्च माध्यमिक	60	3.32	0.69		
	स्नातक	60	3.57	0.65		
	स्नातकोत्तर+	30	3.76	0.59		
आय	₹10,000 से कम	60	2.98	0.68	4.63	.002**
	₹10,001-20,000	96	3.16	0.69		
	₹20,001-30,000	72	3.34	0.68		
	₹30,001-50,000	48	3.49	0.66		
	₹50,000+	24	3.61	0.61		
व्यवसाय	गृहिणी	108	3.18	0.70	3.06	.011*
	कृषि	60	3.27	0.69		
	कृषि मजदूरी	42	3.05	0.71		
	निजी/स्वरोजगार	48	3.46	0.67		
	सरकारी सेवा	18	3.68	0.60		
	अन्य	24	3.39	0.64		
डिजिटल सूचना उपयोग	निम्न	72	2.86	0.65	16.42	<.001**
	मध्यम	126	3.28	0.67		
	उच्च	102	3.68	0.61		

टिप्पणी: *p < .05, **p < .01

तालिका 5 महिलाओं की राजनीतिक अधिकार जागरूकता में विभिन्न सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों के आधार पर अंतर को दर्शाती है। आयु के आधार पर महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। 18-25 वर्ष की महिलाओं का औसत 3.08 है, जबकि 56 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं का औसत 3.55 है। परीक्षण का p-मूल्य .005 है, जो .01 से कम है। उदाहरणात्मक आँकड़ों के आधार पर आयु समूहों में जागरूकता का महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है। शिक्षा के आधार पर सबसे स्पष्ट अंतर पाया गया। अशिक्षित महिलाओं का औसत 2.71 है, जबकि स्नातकोत्तर एवं उससे अधिक शिक्षित महिलाओं का औसत 3.76 है। $F = 11.27$ तथा $p < .001$ है। यह परिणाम संकेत करता है कि शिक्षा राजनीतिक अधिकारों की जानकारी और राजनीतिक प्रक्रिया को समझने की क्षमता से संबंधित महत्वपूर्ण कारक हो सकती है। आय के आधार पर भी महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। ₹10,000 से कम आय वाले समूह का औसत 2.98 और ₹50,000 से अधिक आय वाले समूह का औसत 3.61 है। $F = 4.63$ तथा $p = .002$ है। व्यवसाय के आधार पर भी अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। सरकारी सेवा से जुड़ी महिलाओं का

औसत 3.68 और गृहिणियों का 3.18 रहा। हालांकि, इस अंतर को केवल व्यवसाय का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि शिक्षा, आय और सूचना तक पहुँच जैसे अन्य कारक भी जुड़े हो सकते हैं। सबसे मजबूत अंतर डिजिटल सूचना उपयोग में दिखाई देता है। निम्न डिजिटल उपयोग वाली महिलाओं का औसत 2.86, मध्यम उपयोग वाली महिलाओं का 3.28 और उच्च उपयोग वाली महिलाओं का 3.68 है। $F = 16.42$ और $p < .001$ है। यह परिणाम दर्शाता है कि डिजिटल राजनीतिक सूचना तक पहुँच और राजनीतिक अधिकार जागरूकता के बीच महत्वपूर्ण संबंध हो सकता है। इस प्रकार परिणामों में शिक्षा और डिजिटल सूचना-संपर्क विशेष रूप से महत्वपूर्ण दिखाई देते हैं।

तालिका 6-राजनीतिक अधिकार जागरूकता, राजनीतिक सूचना-संपर्क, राजनीतिक चर्चा, स्वतंत्र निर्णय-क्षमता एवं राजनीतिक सहभागिता के बीच सहसंबंध

चर	1	2	3	4	5	6
1. राजनीतिक अधिकार जागरूकता	1.00					
2. राजनीतिक सूचना-संपर्क	.56**	1.00				
3. राजनीतिक चर्चा	.49**	.58**	1.00			
4. डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता	.52**	.64**	.51**	1.00		
5. स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय	.46**	.43**	.55**	.48**	1.00	
6. समग्र राजनीतिक सहभागिता	.63**	.57**	.61**	.49**	.58**	1.00

टिप्पणी: ** $p < .01$

तालिका 6 में महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता से संबंधित प्रमुख चरों के बीच पियर्सन सहसंबंध प्रस्तुत किया गया है। सभी प्रमुख संबंध सकारात्मक और उदाहरणात्मक आँकड़ों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं।

राजनीतिक अधिकार जागरूकता और समग्र राजनीतिक सहभागिता के बीच $r = .63$ का सहसंबंध पाया गया। यह तालिका में प्रमुख संबंधों में से एक है। इससे संकेत मिलता है कि जिन महिलाओं में अपने राजनीतिक अधिकारों की अधिक जानकारी है, उनमें राजनीतिक सहभागिता भी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है। राजनीतिक सूचना-संपर्क और सहभागिता के बीच $r = .57$ तथा राजनीतिक चर्चा और सहभागिता के बीच $r = .61$ का संबंध पाया गया। इससे पता चलता है कि राजनीतिक सूचना प्राप्त करने और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने वाली महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता का स्तर अधिक होने की प्रवृत्ति दिखाई दे सकती है। डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता और राजनीतिक सूचना-संपर्क के बीच $r = .64$ है, जो अपेक्षाकृत मजबूत सकारात्मक संबंध है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि जो महिलाएँ नियमित रूप से डिजिटल राजनीतिक सूचना प्राप्त करती हैं, वे विभिन्न स्रोतों का उपयोग करने और राजनीतिक जानकारी को समझने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम हो सकती हैं। स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय और समग्र सहभागिता के बीच $r = .58$ है। राजनीतिक अधिकार जागरूकता और स्वतंत्र निर्णय के बीच $r = .46$ है। इससे यह संकेत मिलता है कि अधिकारों की जानकारी और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय-क्षमता के बीच भी सकारात्मक संबंध हो सकता है। हालाँकि, इन सहसंबंधों को कारणात्मक प्रभाव के रूप में नहीं समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय महिलाएँ भी अधिक राजनीतिक जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इसलिए वास्तविक शोध में कारणात्मक व्याख्या के लिए अतिरिक्त सांख्यिकीय परीक्षण आवश्यक होगा।

तालिका 7-महिलाओं की समग्र राजनीतिक सहभागिता के पूर्वानुमान हेतु बहु-प्रतिगमन विश्लेषण

स्वतंत्र चर	B	मानक त्रुटि	मानकीकृत β	t	p-मूल्य
स्थिरांक	0.624	0.221	—	2.824	.005
राजनीतिक अधिकार जागरूकता	0.386	0.062	.348	6.226	<.001**
राजनीतिक सूचना-संपर्क	0.214	0.067	.181	3.194	.002**
राजनीतिक चर्चा	0.276	0.061	.249	4.525	<.001**
डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता	0.148	0.057	.126	2.596	.010*

स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय	0.241	0.064	.207	3.766	<.001**
शिक्षा स्तर	0.172	0.058	.151	2.966	.003**
पारिवारिक राजनीतिक वातावरण	0.119	0.055	.102	2.164	.031*

मॉडल सारांश: $R = .806$; $R^2 = .650$; समायोजित $R^2 = .642$; $F = 77.68$; $df = 7, 292$; $p < .001$

टिप्पणी: * $p < .05$, ** $p < .01$

तालिका 7 में महिलाओं की समग्र राजनीतिक सहभागिता को समझाने वाले प्रमुख कारकों का बहु-प्रतिगमन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। मॉडल में राजनीतिक अधिकार जागरूकता, राजनीतिक सूचना-संपर्क, राजनीतिक चर्चा, डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता, स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय, शिक्षा तथा पारिवारिक राजनीतिक वातावरण को स्वतंत्र चर के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रतिगमन मॉडल का $R = .806$ है। $R^2 = .650$ से संकेत मिलता है कि मॉडल में शामिल सात स्वतंत्र चर संयुक्त रूप से समग्र राजनीतिक सहभागिता में लगभग 65 प्रतिशत भिन्नता को उदाहरणात्मक रूप से स्पष्ट करते हैं। समायोजित $R^2 .642$ है। मॉडल का F-मूल्य 77.68 तथा $p < .001$ है, जिससे पूरा मॉडल सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण दिखाई देता है। राजनीतिक अधिकार जागरूकता का मानकीकृत $\beta = .348$ और $p < .001$ है। यह मॉडल में सबसे बड़ा β है। इससे संकेत मिलता है कि अन्य चरों को नियंत्रित करने पर राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता का राजनीतिक सहभागिता के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध बना रहता है। राजनीतिक चर्चा का $\beta = .249$ तथा स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय का $\beta = .207$ है। दोनों $p < .001$ स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। इससे संकेत मिलता है कि राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय-क्षमता महिलाओं की व्यापक राजनीतिक सहभागिता से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हो सकती है। राजनीतिक सूचना-संपर्क का $\beta = .181$ तथा शिक्षा का $\beta = .151$ है। डिजिटल राजनीतिक सूचना-साक्षरता का $\beta = .126$ और पारिवारिक राजनीतिक वातावरण का $\beta = .102$ है। सभी चर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। इन उदाहरणात्मक परिणामों से यह संकेत मिलता है कि महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता केवल व्यक्तिगत राजनीतिक ज्ञान से निर्धारित नहीं होती, बल्कि **सूचना, चर्चा, शिक्षा, स्वतंत्र निर्णय-क्षमता और सामाजिक वातावरण** जैसे अनेक आयामों से जुड़ी होती है। फिर भी प्रतिगमन में महत्वपूर्ण संबंध को कारणात्मक प्रभाव नहीं माना जाना चाहिए। वास्तविक क्षेत्रीय अध्ययन में प्रतिदर्श, मापन की गुणवत्ता और अन्य संभावित चर को ध्यान में रखते हुए निष्कर्षों की पुष्टि करना आवश्यक होगा।

चर्चा

अध्ययन के उदाहरणात्मक परिणाम महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता के बीच सकारात्मक संबंध को प्रदर्शित करते हैं। समग्र राजनीतिक अधिकार जागरूकता का औसत 3.35 रहा, जबकि राजनीतिक सहभागिता का औसत 3.21 पाया गया। यह अंतर संकेत करता है कि अधिकारों की जानकारी और उनका व्यावहारिक उपयोग एक समान स्तर पर नहीं होते। मतदान के अधिकार की जागरूकता का औसत 3.82 तथा मतदान की नियमितता का औसत 4.02 रहा। इससे पता चलता है कि महिलाओं के बीच चुनावी सहभागिता अपेक्षाकृत मजबूत हो सकती है। यह व्यापक भारतीय शोध से भी संबंधित है जिसमें महिलाओं के मतदान की उच्च भागीदारी के साथ राजनीतिक रुचि और राजनीतिक अभिव्यक्ति में अंतर की चर्चा की गई है। इसके विपरीत प्रतिनिधियों से प्रश्न करने, शिकायत-निवारण, राजनीतिक बैठकों और घोषणापत्रों के संबंध में अपेक्षाकृत कम औसत पाया गया। इसका अर्थ यह हो सकता है कि राजनीतिक सहभागिता का प्रमुख स्वरूप चुनाव-केंद्रित है, जबकि निरंतर राजनीतिक नागरिकता के आयाम अपेक्षाकृत कमजोर हैं। अमेर (2009) के अध्ययन में भी राजनीतिक जागरूकता और चुनावी सहभागिता के बीच संबंध पाया गया, लेकिन जागरूकता का सहभागिता पर प्रभाव सीमित था। इस निष्कर्ष से यह समझ विकसित होती है कि जानकारी को व्यवहार में बदलने के लिए सामाजिक और संस्थागत परिस्थितियाँ भी आवश्यक हैं। शिक्षा के आधार पर राजनीतिक जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। उच्च शिक्षित महिलाओं का औसत जागरूकता स्तर निम्न शिक्षित महिलाओं की तुलना में अधिक रहा। शिक्षा राजनीतिक जानकारी को समझने, विभिन्न स्रोतों की तुलना करने तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं में स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित हो सकती है। डिजिटल सूचना उपयोग के आधार पर भी स्पष्ट अंतर सामने आया। उच्च डिजिटल सूचना उपयोग वाली महिलाओं में राजनीतिक अधिकार जागरूकता का औसत अधिक था। हालांकि केवल डिजिटल पहुँच को राजनीतिक जागरूकता का प्रत्यक्ष कारण नहीं माना जा सकता। डिजिटल सूचना की गुणवत्ता, स्रोत की विश्वसनीयता और सत्यापन क्षमता

भी महत्वपूर्ण हैं। राजनीतिक अधिकार जागरूकता और समग्र राजनीतिक सहभागिता के बीच $r = .63$ का सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। राजनीतिक चर्चा और सहभागिता के बीच $r = .61$ तथा स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय और सहभागिता के बीच $r = .58$ का संबंध पाया गया। ये परिणाम संकेत करते हैं कि राजनीतिक जानकारी, सामाजिक संवाद और राजनीतिक स्वायत्तता व्यापक सहभागिता से जुड़े हुए हैं। बहु-प्रतिगमन मॉडल में राजनीतिक अधिकार जागरूकता का $\beta = .348$ रहा, जो मॉडल में सबसे बड़ा मानकीकृत गुणांक था। मॉडल का $R^2 = .650$ रहा। इसका अर्थ यह नहीं है कि जागरूकता अकेले राजनीतिक सहभागिता का कारण है; बल्कि मॉडल में शामिल सभी चर संयुक्त रूप से सहभागिता में पाई गई भिन्नता के साथ सांख्यिकीय रूप से जुड़े हैं। महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में स्थानीय शासन भी महत्वपूर्ण है। 73वें संविधान संशोधन के बाद पंचायतों में महिलाओं के लिए संवैधानिक आरक्षण ने स्थानीय राजनीतिक प्रतिनिधित्व का संस्थागत आधार मजबूत किया। शोधों ने यह भी दिखाया है कि महिला नेतृत्व स्थानीय नीति-निर्णयों की प्राथमिकताओं से जुड़ सकता है। इसलिए राजनीतिक अधिकार जागरूकता को मतदान से आगे बढ़ाकर स्थानीय निर्णय-निर्माण और सार्वजनिक नेतृत्व से जोड़ना आवश्यक है।

परिकल्पनाओं का औचित्य

परिकल्पना 1-**शून्य परिकल्पना:** महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। सहसंबंध विश्लेषण में राजनीतिक अधिकार जागरूकता और समग्र राजनीतिक सहभागिता के बीच $r = .63$, $p < .01$ पाया गया। इसलिए उदाहरणात्मक आँकड़ों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक अधिकार जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता के बीच सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है।

परिकल्पना 2-**शून्य परिकल्पना:** विभिन्न शैक्षिक स्तरों वाली महिलाओं में राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता के औसत स्तर में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। शैक्षिक स्तर के आधार पर एक-मार्गीय प्रसरण विश्लेषण में $F = 11.27$, $p < .001$ प्राप्त हुआ। अशिक्षित महिलाओं का औसत 2.71 था, जबकि स्नातकोत्तर एवं उससे अधिक शिक्षित महिलाओं का औसत 3.76 था। इसलिए उदाहरणात्मक आँकड़ों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। इससे संकेत मिलता है कि विभिन्न शैक्षिक स्तरों की महिलाओं में राजनीतिक अधिकार जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 3-**शून्य परिकल्पना:** राजनीतिक सूचना-संपर्क, राजनीतिक चर्चा और राजनीतिक अधिकार जागरूकता महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक नहीं हैं। बहु-प्रतिगमन विश्लेषण में राजनीतिक अधिकार जागरूकता ($\beta = .348$, $p < .001$), राजनीतिक सूचना-संपर्क ($\beta = .181$, $p = .002$) तथा राजनीतिक चर्चा ($\beta = .249$, $p < .001$) सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाए गए। मॉडल का $R^2 = .650$ तथा $F = 77.68$, $p < .001$ रहा। इसलिए उदाहरणात्मक परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। ये परिणाम संकेत करते हैं कि राजनीतिक अधिकारों की जागरूकता, राजनीतिक सूचना और चर्चा महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को केवल मतदान के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। महिलाओं को राजनीतिक अधिकारों की जानकारी होना लोकतांत्रिक नागरिकता का महत्वपूर्ण आधार है, लेकिन वास्तविक राजनीतिक सशक्तीकरण के लिए इस जागरूकता का राजनीतिक व्यवहार, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और निर्णय-निर्माण में रूपांतरण भी आवश्यक है। अध्ययन के उदाहरणात्मक परिणामों में मतदान अधिकार, मतदान केंद्र, मतदाता पंजीकरण और महिला आरक्षण जैसे विषयों के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। इसके विपरीत राजनीतिक शिकायत-निवारण, निर्वाचित प्रतिनिधियों से प्रश्न करना, चुनावी नियमों तथा घोषणापत्र संबंधी जानकारी अपेक्षाकृत कम रही। इससे यह संकेत मिलता है कि महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता का स्वरूप अभी भी काफी हद तक चुनाव-केंद्रित हो सकता है। राजनीतिक सहभागिता में मतदान का स्तर अधिक था, जबकि राजनीतिक बैठकों में भागीदारी, प्रतिनिधियों से संपर्क, घोषणापत्र पढ़ना और स्थानीय राजनीतिक मुद्दों को उठाने जैसे सक्रिय आयाम अपेक्षाकृत कम पाए गए। यह निष्कर्ष महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की जानकारी और सक्रिय राजनीतिक

नागरिकता के बीच संभावित अंतर को रेखांकित करता है। शिक्षा, आय, आयु, व्यवसाय और डिजिटल सूचना उपयोग राजनीतिक अधिकार जागरूकता से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े पाए गए। विशेष रूप से उच्च शिक्षा और डिजिटल सूचना-संपर्क वाले समूहों में जागरूकता का स्तर अधिक दिखाई दिया। राजनीतिक अधिकार जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता के बीच सकारात्मक सहसंबंध तथा प्रतिगमन मॉडल में जागरूकता का महत्वपूर्ण योगदान अध्ययन की केंद्रीय अवधारणा को समर्थन देता है। इसलिए महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण के लिए मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों को केवल मतदान की प्रक्रिया तक सीमित रखने के बजाय **संवैधानिक अधिकार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, स्थानीय शासन, राजनीतिक सूचना-साक्षरता, स्वतंत्र निर्णय, शिकायत-निवारण और नागरिक भागीदारी** जैसे विषयों से जोड़ना अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। निर्वाचन आयोग का SVEEP कार्यक्रम भी मतदाता शिक्षा और निर्वाचन साक्षरता को व्यापक लोकतांत्रिक सहभागिता से जोड़ता है। अंततः, महिलाओं की राजनीतिक समानता केवल राजनीतिक अधिकारों के औपचारिक अस्तित्व से नहीं, बल्कि उन अधिकारों की जानकारी, स्वतंत्र उपयोग और सार्वजनिक निर्णय-निर्माण में सार्थक सहभागिता से मजबूत होती है।

संदर्भ सूची

- [1]. Amer, M. (2009). Political awareness and its implications on participatory behaviour: A study of Naga women voters in Nagaland. *Indian Journal of Gender Studies*, 16(3), 361–376. <https://doi.org/10.1177/097152150901600303>
- [2]. Bhatla, N., Walia, S., Khanna, T., & Verma, R. (2012). *Opportunities and challenges of women's political participation in India*. International Center for Research on Women.
- [3]. Chattopadhyay, R., & Duflo, E. (2004). Women as policy makers: Evidence from a randomized policy experiment in India. *Econometrica*, 72(5), 1409–1443. <https://doi.org/10.1111/j.1468-0262.2004.00539.x>
- [4]. Chhibber, P. (2002). Why are some women politically active? The household, public space, and political participation in India. *International Political Science Review*, 23(3), 295–314. <https://doi.org/10.1177/019251210202300307>
- [5]. Election Commission of India. (2023). *Manual on Systematic Voters' Education and Electoral Participation (SVEEP)*. Election Commission of India.
- [6]. Election Commission of India. (2024). *Voter education and electoral participation*. Election Commission of India.
- [7]. Government of India. (1992). *The Constitution (Seventy-Third Amendment) Act, 1992*. Government of India.
- [8]. Haider, E. A., & Nooruddin, I. (2024). Well-behaved women: Engendering political interest in public opinion research. *Comparative Political Studies*. <https://doi.org/10.1177/00104140231209961>
- [9]. Jayal, N. G. (2006). Engendering local democracy: The impact of quotas for women in India's panchayats. *Democratization*, 13(1), 15–35. <https://doi.org/10.1080/13510340500378225>
- [10]. Ministry of Panchayati Raj. (2024). *Status of reservation for women in Panchayati Raj Institutions*. Government of India.
- [11]. Ministry of Panchayati Raj. (2026). *National study report: Low participation in Gram Sabha across the States & Union Territories*. Government of India.
- [12]. Rai, P. (2017). Women's participation in electoral politics in India. *South Asia Research*, 37(1), 1–20. <https://doi.org/10.1177/0262728016675529>
- [13]. Rai, S. M. (2010). *Gender and political economy of development: From nationalism to globalization*. Polity Press.
- [14]. Sapiro, V. (1983). The political integration of women: Roles, socialization, and political participation. *Journal of Politics*, 45(3), 760–775.
- [15]. Verba, S., Burns, N., & Schlozman, K. L. (1997). Knowing and caring about politics: Gender and political engagement. *The Journal of Politics*, 59(4), 1051–1072.